।। ॐ श्रीसद्गुरवे नमः ।।

अनंत श्रीविभूषित परमात्मस्वरूप सर्वगुणसम्पन्न संत सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज के युगल पाद-पद्मों में नमन करते हुए उनके मानसपुत्र गुरुसेवी स्वामी भगीरथ दासजी महाराज के चरणों में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

हे गुरुप्रिय गुरुभक्त!

जैसे स्वाति बूँद चातक को, चाँद चकोर को, मणि मनियारसाँप को, धन लोभी को प्रिय होता है, उससे कहीं अधिक प्रिय आप संत सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज महाराज के थे। तब तो वे आपको प्रकट-अप्रकट रूप से दर्शन देते रहे हैं। उदाहरणतः जब आप अपने सहपाठी श्रीप्रकाश जायसवाल जी के साथ सन् १९६२ ई० के दिसम्बर माह में सातवीं वर्ग की परीक्षा देकर अपनी जन्मभूमि लालगंज लौट रहे थे, लौटने वक्त आपने उनसे पूछा–'प्रकाश! तुम मिड्ल पास करने के बाद क्या पढ़ोगे–कला या विज्ञान?' उन्होंने कहा–'मैं डॉक्टरी पढ़ूँगा।' आपने कहा–'मेरे पिताजी गरीब हैं, अगर वे मुझे अधिक खर्च देकर नहीं पढ़ा सकेंगे। तो मैं किसी संत-महात्मा के पास जाकर उनकी सेवा करूँगा और वे जो योग-साधना बताएँगे, उसे ही करूँगा।' इतना कहना था कि आपके सामने बालू की ढेर पर बैठे एक गैरिक वस्त्रधारी साधु दर्शन दिये। उसे आपने थोड़ा सिर झुकाकर एवं आँखे बंद कर प्रणाम किया। जैसे आँख खोलकर देखा, वे अदृश्य हो गये। उसे आपने कभी पहले नहीं देखा था, उनका नाम तक नहीं सुना था। जब आप दिसम्बर १९६६ ई० में स्व० हनुमान दासजी की प्रेरणा से टीकापट्टी में आयोजित सत्संग में गये तो आप उन्हीं महात्माजी को देखे, जिन्हें आपने बालुका राशि पर देखा था। उनको देखते ही आपके मन में हुआ कि यही साधु बाबा हमको दर्शन दिये थे, अब हमको कहीं भटकना नहीं पड़ेगा। जब आप सद्गुरु महाराज को प्रणाम करने गये, तो सद्गुरु महाराज आपको एकटक देखने लगे, मानों जन्मों का परिचित हो। जब सद्गुरु महाराज मंच पर जाने लगे तो आप हाथ जोड़कर रास्ते के बगल में खड़े थे। जब वे आपके समीप पहुँचे, तो उस समय भी खड़े होकर आपको ऊपर-नीचे निहारकर तब मंच की ओर आगे बढ़े। तब तो आपको सद्गुरु महाराज अपनी सेवा-काल में बोले थे–'तोंय पिछला जन्मों में हमरऽ कोय रहैं।

९ दिसम्बर, १९६६ ई० को आपने टीकापट्टी मे ही दीक्षा लेकर अपने घर में अनासक्त भाव से रहते हुए ध्यानाभ्यास करने लगे। एक दिन जब आप दक्षिणाभिमुख बंगले में उत्तर सिरहाने सोये हुए थे, दिन के काम-काज की थकावट से ब्रह्ममुहूर्त में यद्यपि आप जग गये थे; लेकिन आलस्य के कारण उठकर बैठ नहीं सके, उसी समय आपको जगाने के लिए सद्गुरु महाराज आपके घर पर प्रकट होकर लाठी के अगले सिरे को जोर से पेट पर दबाकर डाँटते हुए बोले–"अभी ध्यान करने का समय है, तुम सोये हुए हो।" यह कृपा किसी प्रिय पात्र पर ही होता है।

हे महर्षि मेँहीँ के मानस मराल!

जब आप गुरुदेव की गौसेवा में थे, आपके मन में किसी कारणवश यह भाव उठा कि यदि गुरु महाराज हमें अपनी नजदीकी सेवा में रखेंगे, तो रहूँगा, नहीं तो मैं अन्यत्र चला जाऊँगा। अंतर्यामी प्रभु आपके मन की बात को जानकर उसके दूसरे दिन ब्रह्ममुहूर्त में ही आपको अपने पास बुलाकर बोले–'आज से तुम मेरे पास रहो।' पुनः उसी दिन सद्गुरु महाराज जी बोले कि तुम मेरी सेवा में बेटा बनकर रहोगे या शिष्य बनकर? आप शीघ्र ही बोले कि बेटा बनकर। एक दिन स्वप्न में गुरु महाराजजी आपसे पूछे कि 'रे भगीरथ! तोरा हम्में कहिया सँ बेटा कहै छियौ?' आपने मन-ही-मन याद करते हुए कहने लगे–'हुजूर! ठीक-ठीक तऽ याद नै आवै छै। लागै छै कि ७१ई० रहै आरो १७ या १८ तारीख रहै, तहिये सँ हुजूर बेटा कहै छियौ। गुरुदेव बोले–'ऊँ हुँ ....., जन्मों सँ.....।'

हे अद्वितीय गुरुभक्त !

आपने सद्गुरु महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज की जो सेवा की है, वह इतिहास में अद्वितीय है, जिस तरह से माँ अपने पुत्र की शारीरिक सेवा करती है, उसी प्रकार आपने सद्गुरु महाराज की हर प्रकार की शारीरिक सेवा की है। यह दुर्लभ सेवा का सौभाग्य विरले मनुष्य को मिलता है।

हे दुर्लभ दर्शन प्राप्त महापुरुष!

आपने संत सद्गुरु महाराज की कृपा से राजेन्द्रनगर पटना में डॉ० नंदलाल मोदी जी के घर सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार का अद्भुत दर्शन किया। गुरु महाराज जी के पास आये काल, गंधर्व आदि का स्वप्न में दर्शन किया। आपने मणिप्रकाश, गोलोचन, अलल पक्षी और बाल्यावस्था में नागकन्या को भी देखा था।

हे भक्ति की भागीरथी बहानेवाले!

४ मार्च, १९७९ ई० के अखिल भारतीय महाधिवेशन मानसी के प्रातःकालीन सत्संग में सद्गुरु महाराज आपको खड़ा होकर बोलने की आज्ञा प्रदान किये थे। आपके बोलने के बाद सद्गुरु महाराज अपने सामने माईक मँगवाकर बोले कि मैं इस लड़के को खड़ा होकर बोलने के लिए इसलिए कहता हूँ कि यह संतमत में आगे काम आएगा।

दिनांक ८.५.१९८१ ई० की बात है, जब पूज्य शिवानंद बाबा (वर्तमान अररिया निवासी) भोजनोपरांत सद्गुरु महाराजजी के पास प्रणाम गये तो सद्गुरु महाराज पूछने की कृपा किये कि 'मेरे बाद संतमत में कौन उपदेश करेगा?' पूज्य शिवानंद बाबा हाथ जोड़ते हुए बोले, 'हुजूर जिनसे करवायेंगे।' इस बात को सुनकर सद्गुरु महाराजजी आपकी ओर इशारा करते हुए बोले थे कि 'मेरे बाद संतमत में यह उपदेश करेगा।' आज आप अहर्निश संतमत की सेवा में जुटे हुए, सद्गुरु महाराज की ही भाँति ईश्वर-भक्ति के प्रचार में तन-मन-धन से लगे हुए हैं। आपके द्वारा दीक्षित शिष्य कनाडा, नार्वे, आस्ट्रेलिया, हॉलैंड, स्वीट्जरलैंड आदि देशों में भी है।

हे पुण्यपुंज से परिपूरित महापुरुष!

रामचरितमानस में आया है–'पुन्य एक जग महँ नहीं दूजा। मन क्रम वचन विप्र पद पूजा।।' भगवान् बुद्ध के वचन में आया है– पूजा रहे पूजयतो बुद्धे यदि व सावके। पपञ्च समतिक्कन्तो तिण्णसोक परिद्दवे।।१७।।

ते तादिसे पूजयतो निब्बुते अकुतोभये। न सक्का पुञ्ञं संखातुं इमेत्तम्पि केनचि।।१८।। (बुद्धवग्गो)

पूजनीय बुद्धों अथवा उनके श्रावकों जो संसार को अतिक्रमण कर गये हैं, जो शोक-भय को पार कर गये हैं, उनकी पूजा के पुण्य का परिणाम इतना होगा, कहा नहीं जा सकता। पुन्य पुंज के साक्षात् मूर्ति सद्गुरु महाराज की सेवा कर आप भी पूण्य से परिपूरित हो गये हैं।

हे दुर्लभवर प्राप्त महापुरुष!

पूज्य गुरुदेव आप पर अति प्रसन्न होकर बोले थे, तुम्हारी भक्ति इसी जन्म में पूरी होगी। जाओ, तुमको सब कुछ दे दिया। इसको तीनों लोक सूझेगा। तुम्हारी लंबी आयु होगी। तुमको लोग विदेश ले जाएँगे। आपके लिए सद्गुरु महाराज पाँच बार प्रार्थना किये–'हे ईश्वर! हे परमेश्वर! जो गुण हममें है, सब भगीरथ को हो। और तीन बार हे ईश्वर! हे परमेश्वर! जो अवगुण हममें है, वह भगीरथ को नहीं हो। यह सुनकर आपके मन में हुआ, गुरु महाराज में तो कोई अवगुण नहीं है, ये तो संत अवस्था प्राप्त कर चुके हैं। इनके द्वारा बहुतों का उपकार हुआ है और हो रहा है। यह मन की बात जानकर अंतर्यामी गुरुदेव पुनः बोले–अवगुण यही है, हम जो लेटे रहते हैं, यह भगीरथ को नहीं हो।

हे हम अबुद्ध जन के आशारश्मि!

हम अज्ञानी, अभिमानी, पाप-ताप से संतप्त जन आशा करते हैं कि आप भी सद्गुरु महाराज की भाँति त्रयताप से बाहर निकालने के लिए आतुर रहेंगे।

दिनांक : 15 जनवरी, 2016 ई०

वितरक – राजेश, युगेश

प्रेषक – नाथू

हम हैं आपके कृपाकांक्षी

तपेश्वर पंडित

सह बनमनखी - वासी

पूर्णिया (बिहार)